शाकनाशियों का वितरण एवं खरपतवार प्रबंधन प्रशिक्षण

पंतनगर। 20 मार्च 2026। ग्राम ऐंचटा, गिधौर, चरुवेरा, चौटूखेड़ा, अनूसर एवं प्रतापपुर, सितारगंज में आज कृषकों के लिए 'शाकनाशियों का वितरण एवं खरपतवार प्रबंधन प्रशिक्षण' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 किसानों की उपस्थिति रही, जिनमें महिला कृषकों की भी सहभागिता रही।

प्रशिक्षण के दौरान पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डा. एस. पी. सिंह द्वारा अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार प्रबंधन शोध परियोजना के 'अनुसूचित जाति उपयोजना' के अंतर्गत, किसानों को विभिन्न फसलों में खरपतवार प्रबंधन की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि फसलों में शाकनाशियों का प्रयोग संस्तुत मात्रा एवं उचित समय पर करना अत्यंत आवश्यक है, साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि शाकनाशी का चयन खेत में उपस्थित खरपतवारों के प्रकार के अनुसार करना चाहिए, तभी प्रभावी नियंत्रण संभव हो पाता है। परियोजनाधिकारी डा. एस.पी. सिंह द्वारा प्रत्येक कृषक के प्रक्षेत्र पर जाकर भ्रमण कर उनकी फसल तथा खरपतवार संबंधी समस्याओं का समाधान किया। परियोजनाधिकारी के साथ ही परियोजना के वरिष्ठ शोधार्थी आर.पी. सिंह, धर्मेन्द्र कुमार, राजीव, प्रक्षेत्र सहायक प्रक्षेत्र पर उपस्थित रहे। डा. सिंह ने किसानों को शाकनाशी के छिड़काव हेतु सही पानी की मात्रा के प्रयोग के बारे में भी जागरूक किया। उन्होंने कहा कि अधिक या कम पानी के उपयोग से दवा का प्रभाव कम हो जाता है, इसलिए खरीफ फसलों में पानी की निर्धारित मात्रा बोआई से पूर्व 700 ली0/हे0 एवं बोआई पश्चात् 500 ली0/हे0 से करना चाहिए। इसी क्रम में परियोजनाधिकारी ने कृषकों को धान में पौध से पौध की दूरी एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी लगभग 20–30 सेमी. होनी चाहिए। डा. सिंह ने बाजार में उपस्थित नये–नये शाकनाशियों जिनसे अधिक उपज प्राप्त हो रही है जैसे धान में नोवलेक्ट फ्लोरपाइरॉक्सिफेन बेंजिल 2.13 प्रतिशत डब्लू/डब्लू+साइहैलोफॉप–ब्यूटाइल 10.64 प्रतिशत डब्लू/डब्लू ई.सी. 150 ग्रा./हे. (जमाव के 25 दिन बाद) और कोरीयॉन पिनॉक्सुलम 0.97 प्रतिशत + ब्यूटाक्लोर 38.8 प्रतिशत एस.ई. 820 ग्रा./हे. (जमाव से 0-7 दिन के अन्दर),सोयाबीन में, फ्लुजिफॉप–पी–ब्यूटाइल 11.1 प्रतिशत डब्लू/डब्लू +फोमेसाफेन 11.1 प्रतिशत डब्लू/डब्लू एस. एल. 250 ग्रा0/हे0 (जमाव उपरांत) (रेडी–मिक्स) तथा सोडियम एसीफ्लूरफेन 16.5 प्रतिशत + क्लोडिनाफॉपप्रोपरजिल 8 प्रतिशत ई.सी.165 + 80 ग्रा0/हे0 (जमाव उपरांत) एवंमक्केमें, टोपरामेजोन 25 ग्रा./हे. (जमाव पश्चात्), एट्राजिन 50 प्रतिशत डबलू. पी. (500 ग्रा0/हे0)+ टोपरामेजॉन 33.6 एस. सी. 25.2 ग्रा0/हे0) टैंक–मिक्स के बारे में विस्तार से समझाया। परियोजना अधिकारी ने बूम नोजल का प्रयोग करने पे जोर दिया। कार्यक्रम के अंत में परियोजना के 'अनुसूचित जाति उपयोजना' के अंतर्गत, कृषकों को खरीफ फसलों में प्रयोग होने वाले विभिन्न शाकनाशियों का वितरण किया गया।